ISSN - 0974-1526

U.G.C. Serial No. 01, Journal No. 42486

SAMSKRTI SANDHĀNA

Volume - XXXII

No. 1

(January-June) 2019

AN INTERNATIONAL REFERRED JOURNAL

Editor

Dr. Jhinkoo Yadav

Associate Editors

Dr. Vinod Kumar Yadav

Dr. Ajit Kumar Choudhary

JOURNAL OF THE MANAY SANSKRITI SHODH SANSTHAN



e-mail: manavsanskritiss1987@gmail.com; jhinku.yadav@gmail.com website: www.msssvaranasi.com

हरीसिंह गौर पुरातत्त्व संग्रहालय, सागर की कुबेर प्रतिमाएं: साहित्यिक एवं प्रतिमाशास्त्रीय अवलोकन

सुरेन्द्र कुमार यादव*

Abstract:

Present research paper is based on literature and Iconographical studies of Kubera, which is displayed in Harisingh Gour Archaeological Museum, Sagar, Madhya Pradesh. Kubera is the Lord of wealth, fortunes and prosperity and also the chief of the Yakshas. Kubera is one god that all the three religions of India namely Hinduism, Buddhism and Jainism claim to be their own deities. The Brahminical texts mentioned him as closely associated with Shiva. In Buddhist texts, Kubera has been described as Panchika or Jambhala, the consort of Hariti and in the Jaina works he is called Sarvanubhuti. the attending Yaksha of Tirthankara Mallinatha. The various Iconographic texts describe Kubera as a pot bellied deity and having two, four or eight arms. He wears a crown and necklaces consisting of golden coins. His wife Riddhi, representing the journey of life, is seated on his left lap, with her left hand on the back of Kubera and the right holding a ratna-patra (jewel-pot). The Present research paper welcome light on the origin, form, development and Iconographical features of Kubera.

भारतीय कला मानव की अनुभूतियों को अभिव्यक्ति प्रदान करने का सशक्त माध्यम रही है। ये अभिव्यक्ति जीवन के विविध पक्षों, यथा– धार्मिक, आध्यात्मिक, सांस्कृतिक एवं समृद्धि आदि के समन्वयात्मक भाव को निर्देशित करती है। वास्तव में कला द्वारा किसी भी संस्कृति के स्वरूप को ज्ञात किया जा सकता है। कुबेर को भारतीय संस्कृति में वैभव, समृद्धि एवं सौभाग्य का सूचक माना जाता है, जिनका वर्णन शब्द (काव्य) एवं रूप (मूर्ति) दोनों में मिलता है। ब्राह्मण, जैन एवं बौद्ध सम्प्रदाय के धर्म, कला एवं साहित्य में कुबेर को समादर एवं सम्मान प्राप्त है। कुबेर प्रतिमा लम्बोदर, बड़े दाँतों युक्त, आभूषणों से सज्जित एवं हाथों में नकुली (मुद्रा की थैली) धारण किये हुये मिलती है। ब्राह्मण मूर्तिकला में कुबेर के बायों जंघा पर उनकी पत्नी वृद्धि (वैभव) का अंकन मिलता है, जिसे बौद्ध कला में हारीति अथवा वसुंधरा कहा गया है। प्रारम्भ में कुबेर *सहायक प्राध्यापक, प्राचीन भारतीय इतिहास, संस्कृति एवं पुरातत्त्व, डॉ० हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर, म०प्र०।